

पाठ 3 – अध्याय 1

हमने अपने लैव्यव्यवस्था अध्ययन के पहले दो सप्ताह केवल पृष्ठभूमि तैयार करने और लैव्यव्यवस्था को अधिक समझने योग्य, आनंददायक और संभवतः अर्थपूर्ण बनाने के लिए आधारभूत कार्य करने में बिताए। मैं पिछले पाठ से कुछ सिद्धांतों को दोहराना चाहूँगा जिन्हें हमें अपने अध्ययन में ध्यान में रखना चाहिए:

1. परमेश्वर विभाजित करता है, चुनाव करता है, और अलग करता है। अर्थात्, यहोवा बहुत सख्त सीमाएँ खींचता है और लोगों, राष्ट्रों और उपासना पद्धतियों के बीच कठोर और तेज़ भेद करता है। वह बुराई और पाप के प्रति असहिष्णु है, और वह खुद को यह घोषित करने का अनन्य अधिकार सुरक्षित रखता है कि कौन क्या है। वह उन लोगों को बाहर करता है जो "उसके लोग" नहीं हैं; लैव्यव्यवस्था के समय, उसके लोग केवल इस्राएल के लोग हैं।
2. लैव्यव्यवस्था हमें पुरोहितीय विश्वदृष्टि प्रदान करती है। यह परमेश्वर के नए लोगों की दृष्टि से लिखा याजकों का एक आदेशित समूह, जो विशेष रूप से लैव्यव्यवस्था गोत्र से आते हैं।
3. परमेश्वर पाप को दो बुनियादी श्रेणियों में वर्गीकृत करता है: जानबूझकर किया गया पाप और अनजाने में किया गया पाप। मनुष्य जिस तरह से पाप के बारे में सोचते हैं, उससे अलग... जो कि बड़ा या छोटा, तुच्छ या भयानक, महत्वहीन या मोक्ष को खतरे में डालने वाला होता है।
4. जिस बलिदान प्रणाली का हम अध्ययन करने जा रहे हैं, वह जानबूझकर किए गए पापों से संबंधित नहीं है। इसलिए जानबूझकर किए गए पाप के लिए परमेश्वर के साथ सुलह का कोई साधन प्रदान नहीं करता है। यह केवल अनजाने में किए गए पापों से संबंधित है। लैव्यव्यवस्था में हम जो कुछ भी पढ़ेंगे, वह अपराधी को परमेश्वर के साथ सुलह नहीं कराएगा यदि उस अपराधी के पाप को "अत्यधिक" या "महान" माना जाता है। जो कि बाइबल में "जानबूझकर" के लिए कहा जाता है।
5. बलिदान प्रणाली पाप के प्रायश्चित्त से कहीं अधिक है। हम देखेंगे कि कई बलिदान प्रणाली पाप के प्रायश्चित्त से कहीं अधिक है। परमेश्वर द्वारा नियुक्त बलिदानों का पाप से कोई सम्बन्ध नहीं है।
6. जबकि यीशु ने बलिदान प्रणाली को पूरा किया, उसने पापों की एक निश्चित श्रेणी के लिए प्रायश्चित्त करने हेतु बलिदान प्रणाली की सीमित क्षमताओं से भी कहीं अधिक को पूरा किया।
7. बलि प्रथा के पीछे मूलभूत सिद्धांत **प्रतिस्थापन** है। अर्थात्, पशुओं की मृत्यु, उन मनुष्यों की मृत्यु का **स्थान** लेने जा रही थी, जो यहोवा के विरुद्ध पाप करने के दोषी थे।

8. लैव्यव्यवस्था, निर्गमन, लैव्यव्यवस्था और संख्या की पुस्तक श्रृंखला की मध्य पुस्तक है। हमें लैव्यव्यवस्था को इस तरह से पढ़ना चाहिए जैसे कि यह निर्गमन की ही अगली कड़ी है, जो अंततः संख्या में आगे बढ़ती है।

लैव्यव्यवस्था 1:1 पढ़ें— अंत तक

लैव्यव्यवस्था के प्रथम शब्द, "अब उसने (मूसा को) पुकारा", इब्रानी भाषा में हैं वैयक्रा... और वैयक्रा वह नाम है जो इब्रानियों ने इस पुस्तक को दिया है, जिसे अन्यजाति लोग इसके यूनानी नाम लैव्यव्यवस्था से पुकारते हैं।

हालाँकि ये पहले कुछ शब्द, अब उसने पुकारा, हमें अजीब लगते हैं, लेकिन इनका एक महत्वपूर्ण अर्थ है जिसे समझना ज़रूरी है: यहोवा कुछ बहुत ही औपचारिक, बहुत महत्वपूर्ण घोषणाएँ करने वाला है। ठीक वैसे ही जैसे जब हमारे राष्ट्रपति कभी-कभी ओवल ऑफिस में अपने डेस्क से भाषण देते हैं, तो हम समझते हैं कि जो होने वाला है वह नियमित समाचार सम्मेलनों या साक्षात्कारों से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण और सार्थक है। जब यह ओवल ऑफिस से होता है, तो यह एक विशेष घटना होती है। लैव्यव्यवस्था के आरंभ में यहाँ प्रोटोकॉल वैसा ही है जैसा कि निर्गमन में था जब यहोवा ने मूसा को माउंट सिनाई के शिखर से मूसा को व्यवस्था देने के लिए बुलाया था; लेकिन इस बार यहोवा मूसा को सबसे महत्वपूर्ण बलिदान प्रणाली देने के लिए बुलाता है जो मनुष्यों पर परमेश्वर के क्रोध को शांत करेगी, जब वे परमेश्वर को अपमानित करते हैं।

मुझे अपनी पिछली मीटिंग में आपसे कही गई बात को दोहराने की अनुमति दें: बलिदान प्रणाली और कानून दो प्राथमिक घटक हैं जो मिलकर ईश्वर की न्याय प्रणाली बनाते हैं। इब्रानी में, मिशपत। और जबकि रोज़मर्रा की आम बातचीत में एक इब्रानी आमतौर पर ईश्वर की न्याय प्रणाली के हर तत्व को कानून कहता है, बलिदान प्रणाली को सिर्फ कानून का हिस्सा माना जाता है, लेकिन बलिदान प्रणाली और कानून के काम करने का तरीका उन्हें कुछ हद तक अलग बनाता है। कानून और बलिदान प्रणाली दोनों के अलग-अलग कार्य और बहुत अलग-अलग उद्देश्य हैं। कानून सज़ा की ओर ले जाता है जबकि बलिदान प्रणाली प्रायश्चित, क्षमा और मेल-मिलाप की ओर ले जाती है।

शब्द, कानून, बहुत आम हो गया है; इतना कि यहूदियों के बीच भी इसका व्यापक रूप से दुरुपयोग और गलत समझा जाता है। ईसाई चर्च के भीतर इसका विशेष रूप से दुरुपयोग और बेतहाशा (और मुझे लगता है कि कुछ हद तक जानबूझकर) दुरुपयोग किया जाता है। मैं समझाता हूँ: भले ही हम यहोवा को निर्गमन की पुस्तक के लगभग आधे भाग तक कानून कहे जाने वाले शब्द का उच्चारण करते नहीं देखते हैं, लेकिन यहूदी आमतौर पर "कानून" शब्द का इस्तेमाल पूरे तोरह के पर्याय के रूप में करते हैं। यानी, वे बाइबल की पहली 5 पुस्तकों को ही कानून कहेंगे, भले ही निर्गमन तक कानून दिया ही न गया हो। इसके अलावा हमें यह भी याद रखना चाहिए कि यहूदी लोगों के पास अन्य "कानून" भी हैं, जो तल्मूड जैसे गैर-बाइबल

स्रोतों से लिए गए हैं, जिन्हें वे कानून कहते हैं। इसलिए यहूदी किसी भी और हर धार्मिक निर्देश को कानून कहते हैं, चाहे वह शास्त्र से हो या उनके धार्मिक नेताओं के फैसलों से, और यहाँ तक कि उनके सबसे बड़े रब्बियों की सामान्य टिप्पणी से भी। कानून एक बहुत ही भ्रामक शब्द हो सकता है। सबसे अच्छा सादृश्य जो मैं सोच सकता हूँ वह यह है कि चर्च में हमारे पास बहुत से लोग हैं जो अपने हाथों में केवल नया नियम लेकर घूमते हैं; कभी-कभी एक बिलकुल नए ईसाई के पास केवल 4 सुसमाचारों की एक पुस्तक होती है। अगर हम उनसे पूछें कि उनके हाथ में क्या है, तो वे आमतौर पर जवाब देंगे, “बाइबल”। अब यह वास्तव में सटीक नहीं है, है न, क्योंकि उनके पास जो है वह बाइबल का एक अंश है; लेकिन हम जानते हैं कि उनका क्या मतलब है। हम अक्सर किसी पादरी या मंत्री को उपदेश देते और कहते हुए सुनते हैं कि वह बाइबल सिखा रहा है। जबकि अक्सर वह जो सिखा रहा होता है वह वास्तव में एक सिद्धांत होता है। एक संप्रदाय आधारित चर्च परंपरा जिसे बाइबल के सिद्धांत का प्रतिनिधित्व करने के लिए कहा जाता है। इन दोनों मामलों में हम गैर-यहूदी विश्वासी जो ईसाई-ईज़ी बोलते हैं, पूरी तरह से समझते हैं कि वे क्या कह रहे हैं। भले ही तकनीकी रूप से यह सटीक न हो। यह सादृश्य वैसा ही है जैसा यहूदियों के मामले में है जब वे कानून शब्द का प्रयोग करते हैं। इसका अर्थ कई चीजें हो सकती हैं और हमें संदर्भ से यह समझना होगा कि उस शब्द का कोई विशेष प्रयोग उस समय क्या संदर्भित कर रहा है।

यहाँ लैव्यव्यवस्था में ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर व्यवस्था और बलिदान प्रणाली के बीच औपचारिक विभाजन करता है। उस छोटे से वाक्यांश के महत्व को याद रखें, “अब वह (अर्थात् परमेश्वर) यह दर्शाता है कि एक महत्वपूर्ण घटना घटने वाली है, कुछ बहुत बड़ी घटना। हमें मूलतः परमेश्वर से वही प्रस्तावना मिली थी जब उसने मूसा व्यवस्था को प्राप्त करने के लिए माउंट सिनई पर आने का निर्देश दिया था। अब, एक अलग घटना में, यहोवा ने फिर से इस महत्वपूर्ण प्रस्तावना का उच्चारण किया... अब उसने बुलाया... और इस बार परमेश्वर मूसा को बलिदान प्रणाली देगा। तो, सबसे पहले, निर्गमन में, परमेश्वर मूसा को पाप की परिभाषा देता है, जो कानून में निहित है, और उस कानून संहिता के किसी भी अध्यादेश को तोड़कर पाप करने के प्ररिणाम। इसके अलावा, कानून देने के द्वारा प्रभु ने इस्राएल के लिए नैतिक विकल्प निर्धारित किए हैं; नैतिक विकल्प जो प्रत्येक इस्राएली की इच्छा के अनुसार पालन या अवज्ञा करने का निर्णय लेंगे। अब, लैव्यव्यवस्था में, परमेश्वर मूसा को अपनी न्याय प्रणाली का दूसरा भाग दे रहा है। वह भाग जो किसी के पाप करने और कानून संहिता को तोड़ने पर प्रायश्चित प्रदान करता है। बेशक, जैसा कि हम अब जानते हैं, यह प्रायश्चित केवल एक निश्चित प्रकार के पाप के लिए उपलब्ध है। अनजाने में किया गया पाप। वैसे, मैं आपको बार-बार यह याद दिलाना चाहता हूँ, क्योंकि यह मुख्य रूप से बलिदान प्रणाली का वह गुण है जो केवल उन पापों के लिए प्रायश्चित प्रदान करता है जो जानबूझकर नहीं किए गए थे, जिसके कारण पौलुस मसीह के बलिदान को श्रेष्ठ और व्यवस्था के बलिदान प्रणाली वाले भाग को निम्नतर बताता है, जब दोनों की तुलना की जाती है।

पद 2 उन सिद्धांतों में से एक को बहुत स्पष्ट करता है जो मैंने कुछ मिनट पहले आपके लिए गिनाए थे: यहोवा बेनेई इस्राएल से बात कर रहा है। वह इस्राएल से बात कर रहा है, जो उसके लोग हैं। इस समय कोई और उसके लोग नहीं हैं। अब पुराने नियम में इस इब्रानी शब्द, बेनेई इस्राएल का इस्तेमाल किया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है **इस्राएल के युवा**। हालाँकि, इसे आमतौर पर हमारी बाइबल में “इस्राएल के बच्चे” के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। हालाँकि, आधुनिक पश्चिमी सोच में इसका अर्थ “इस्राएली लोग” के रूप में सबसे अच्छा व्यक्त किया गया है। इस अभिव्यक्ति का मतलब केवल युवा नहीं है, न ही इसका मतलब बच्चे हैं; न ही इसका मतलब केवल उन लोगों को संदर्भित करना है जिनकी नसों में याकूब का खून है, जो अब्राहम, इसहाक और याकूब के वंशावली वंशज थे। क्योंकि हज़ारों—हज़ारों विदेशी (गेर) पहले से ही थे, और आगे भी इस्राएल में शामिल होते रहेंगे। बेनी इस्राएल एक राष्ट्रीय शब्द है। यह पूरे समूह को संदर्भित करता है। इस मामले में, यह “अमेरिकी लोगों” को कहने जैसा है।

मंच तैयार होने के साथ यानी, हम जानते हैं कि कौन बोल रहा है (यहोवा), यह कहाँ हो रहा है (जंगल के तम्बू में), और यह कि परमेश्वर स्वयं मूसा और इस्राएल राष्ट्र को संबोधित कर रहा है। अब हमें पहले प्रकार की भेंट या बलिदान के बारे में निर्देश दिया गया है। यह होमबलि है। पद 2 में जब हमें बताया गया कि “यदि कोई यहोवा के लिए भेंट लाता है”। भेंट के लिए इस्तेमाल किया गया शब्द है **कोर्बन**। यह याद रखने के लिए एक अच्छा शब्द है क्योंकि यह एक सामान्य इब्रानी शब्द है जिसका अर्थ है कोई भी भेंट किसी भी तरह की भेंट। यह चर्च की तरह है जहाँ भेंट शब्द का अर्थ धन, संपत्ति, व्यक्तिगत समय से लेकर कुछ भी हो सकता है। और भेंट सामान्य निधि के लिए हो सकती है या यह किसी विशिष्ट चीज़ के लिए हो सकती है। इसका मतलब हमारा नियमित दशमांश हो सकता है, या दशमांश से ऊपर कुछ हो सकता है, या बस अनियमित देना हो सकता है यदि कोई दशमांश नहीं देता है या शायद यह किसी आराधनालय या चर्च में जाते समय एक प्रतीकात्मक दान है।

इसलिए, **कोर्बन** होमबलि नामक बलिदान के इस विशेष वर्ग के लिए विशिष्ट नाम नहीं है। प्रत्येक वर्ग की भेंट, प्रत्येक प्रकार के **कोर्बन** का एक विशिष्ट इब्रानी नाम होगा। होमबलि के मामले में, यह **‘ओलाह** है। **‘ओलाह** मूल इब्रानी शब्द है जिसका हम लगभग सार्वभौमिक रूप से “होमबलि” के रूप में अनुवाद करते हैं। मैं बस एक पल के लिए थोड़ा तकनीकी होना चाहता हूँ। “होमबलि” शब्द को विद्वान इब्रानी शब्द **‘ओलाह** की “कार्यात्मक परिभाषा” या “कार्यात्मक अनुवाद” कहते हैं। हम तोरह में ऐसे बहुत से कार्यात्मक अनुवादों का सामना करने जा रहे हैं। इसका मतलब यह है कि यह इब्रानी शब्द का शाब्दिक अनुवाद नहीं है क्योंकि शाब्दिक अनुवाद का हमारे लिए कोई मतलब नहीं होगा। वास्तव में कभी—कभी शाब्दिक अनुवाद बाइबल विद्वानों और अनुवादकों द्वारा जाना या सहमत भी नहीं होता है। माना जाता है कि **‘ओलाह** का शाब्दिक अर्थ या तो “चढ़ना”, “ऊपर जाना” या “पास लाना” होता है। इसलिए ज़्यादातर लोग इसे **‘ओलाह** कहते हैं। **‘ओलाह** का शाब्दिक अनुवाद “निकट—बलि” के रूप में किया जा सकता है, या हमारी संस्कृति के अनुसार

एक आरोही भेंट”। यह बहुत अजीब है अनुवादकों ने सोचा कि इसका इस तरह से अनुवाद करने का कोई उद्देश्य नहीं है। इसलिए ‘ओलाह’ शब्द का शाब्दिक अनुवाद देने के बजाय यह निर्धारित किया गया कि पाठक को “निकट-बलि” का कार्य या उद्देश्य बताना बेहतर होगा; और वह कार्य परमेश्वर को एक भेंट के रूप में है जिसे वेदी पर आग में जलाया जाता है। एक होमबलि। इसलिए “होमबलि” का अनुवाद आमतौर पर ‘ओलाह’ के रूप में किया जाता है। और यह गलत नहीं है। इसमें केवल यह अर्थ शामिल नहीं है कि भेंट को जलाने से, यह धुआँ छोड़ता है, जो इसे स्वर्ग में परमेश्वर के पास ले जाता है। मैं हर बलिदान के नाम को, सबसे छोटे विवरण में नहीं तोड़ने जा रहा हूँ, जैसा कि मैंने अभी ‘ओलाह... होमबलि’ के साथ किया है। मैं बस आपको यह समझाना चाहता था कि कार्यात्मक अनुवाद क्या है और बाइबल में कई बार हमें शब्दों के शाब्दिक अनुवाद के बजाय कार्यात्मक अनुवाद मिलते हैं। और इसमें कुछ भी गलत नहीं है। हालाँकि कभी-कभी हम बहुत अधिक समझ प्राप्त कर सकते हैं यदि हम मूल इब्रानी शब्द की भी जाँच करें और आगे बढ़कर उसका शाब्दिक अनुवाद करें क्योंकि यह उस युग की इब्रानी मानसिकता और मध्य पूर्वी संस्कृति को उजागर करता है। यह हमें इस बात का बेहतर अंदाजा लगाने में मदद करता है कि जब वे ये काम कर रहे थे तो उन लोगों की मानसिक तस्वीर क्या थी। और ‘ओलाह’ के मामले में, “निकट-बलि” जिसे हम आम तौर पर होमबलि के रूप में संदर्भित करते हैं, शब्दों को शाब्दिक रूप से देखने पर हम देखते हैं कि यह **धुआँ** है, और वह धुआँ कहाँ जा रहा है, यह उस भेंट की प्रभावशीलता का मुख्य तत्व है। मैं आपको थोड़ी देर में दिखाऊँगा कि धुआँ इतना महत्वपूर्ण क्यों है।

अध्याय एक में हम जिस तरह की होमबलि देखते हैं, उसे मैं “व्यक्तिगत” भेंट कहना पसंद **करूँगा**। यानी यह भेंट (और आगे की कई भेंटें जिनका हम अध्ययन करेंगे) व्यक्तियों, निजी व्यक्तियों द्वारा, उस व्यक्ति की ओर से दी जाती है। यह लैव्यव्यवस्था में बाद में हम विशेष भेंटों, बलिदानों, जिसमें होमबलि शामिल है, को देखेंगे जो इस्राएल राष्ट्र की ओर से दी जाती है राष्ट्रीय भेंट। यह एक महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित करता है जिसका उपयोग पूरे बाइबल में किया जाता है कि परमेश्वर इस्राएल और हमारे साथ, व्यक्तिगत स्तर पर और कॉर्पोरेट या समूह स्तर पर व्यवहार करता है। वह कॉर्पोरेट स्तर चर्च हो सकता है, यानी सभी विश्वासी.. . या यह एक राष्ट्र के रूप में हो सकता है। एक शाब्दिक राष्ट्र जैसा कि हम आज सोचते हैं। जब हम अंत समय की भविष्यवाणियों को पढ़ते हैं तो हम परमेश्वर द्वारा व्यक्तियों के बीच अंतर करने के बारे में पढ़ते हैं; उदाहरण के लिए, वह कुछ लोगों के माथे पर एक निशान लगाएगा, प्रत्येक व्यक्ति को चुनेगा, ताकि उन्हें सुरक्षित रखा जा सके और उन लोगों की पहचान की जा सके जो बचाए जाएँगे, न कि उन लोगों की जो चिन्हित नहीं किए गए हैं और जिन्हें दंडित किया जाएगा। लेकिन हम यह भी देखते हैं कि परमेश्वर पूरे राष्ट्रों के साथ व्यवहार करता है; उदाहरण के लिए हमें बताया गया है कि जो राष्ट्र इस्राएल के विरुद्ध **आएँगे**, उन्हें नष्ट कर दिया जाएगा।

इसलिए लैव्यवस्था 1 की होमबलि एक व्यक्तिगत, व्यक्तिगत बलिदान है। और इसे तकनीकी रूप से भोजन की भेंट भी माना जाता है। मूसा के समय में माँस एक विलासिता की वस्तु थी और यीशु के दिनों में भी थी। इसलिए जबकि होमबलि के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला पूरा जानवर मारा जाता था और पूरी तरह से जलने के लिए वेदी पर फेंक दिया जाता था, लेकिन अन्य प्रकार के पशु बलिदानों के मामले में ऐसा नहीं था। बल्कि एक प्रक्रिया थी जिसमें बलि के जानवर के केवल कुछ हिस्सों को पीतल की वेदी पर आग में भस्म करने के लिए रखा जाता था, शेष का उपयोग भोजन के लिए किया जाता था। स्थिति के आधार पर इसे पुजारी या बलि लाने वाले व्यक्ति या कुछ मामलों में दोनों द्वारा खाया जाता था। वास्तव में यह केवल इब्रानियों में से अधिक संपन्न लोग थे जो माँस खाते थे जो पहले बलि के रूप में इस्तेमाल नहीं किया गया था क्योंकि यह महँगा था। मैं इसे फिर से कहता हूँ: औसत इस्त्राएली के लिए, उन्होंने जो भी माँस खाया वह बलि का बचा हुआ हिस्सा था, भले ही कानून ने उन्हें माँस खाने की अनुमति दी थी जो बलि का हिस्सा नहीं था।

होमबलि में पूरा जानवर (खाल को छोड़कर, जो याजकों को दिया जाता था) वेदी की आग में भस्म हो जाता था। कल्पना कीजिए कि बहुत कम माँस वाले लोगों को कैसा महसूस होता होगा जब वे हर बार भेड़ या बकरी को वेदी पर ले जाते थे और उसे जलते हुए देखते थे। यह एक महंगी भेंट थी और यह वास्तव में एक विशिष्ट इस्त्राएली परिवार के लिए इतना मूल्यवान जानवर त्यागने के लिए एक व्यक्तिगत बलिदान का प्रतिनिधित्व करती थी। इन परिवारों ने यहोवा को वह देने के लिए खुद को वंचित किया जो उसने उन्हें देने के लिए निर्देश दिया था। अब होमबलि में बलि के लिए पालतू जानवरों की एक पूरी श्रृंखला का उपयोग किया जा सकता था जिसमें बैल, भेड़, यहाँ तक कि कबूतर भी शामिल थे। इसका कारण एक व्यावहारिक कारण था: गरीब लोगों के पास मेढ़े या बैल की बलि देने के लिए पैसे या साधन नहीं थे। पिछले हफ़्ते मैंने बताया था कि बलि के जानवर का आकार या उसका अंतर्निहित मूल्य... बैल आमतौर पर सबसे बड़ा और सबसे मूल्यवान होता है और कबूतर सबसे कम... इसका किसी पाप के प्रायश्चित की गंभीरता या ईश्वर को कम या ज़्यादा प्रसन्न करने से कोई लेना-देना नहीं है। साथ ही ध्यान दें कि मैंने कहा था कि “पालतू” जानवरों को विशेष रूप से बलि के जानवरों के रूप में बुलाया जाता है। वे जानवर जो आम तौर पर भोजन के उद्देश्य से पाले जाते हैं, वे वेदी पर बलि के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं। बलि के उद्देश्यों के लिए किसी भी जंगली जानवर की अनुमति नहीं थी। आप हिरण या पहाड़ी बकरी को मारकर बलि के लिए इस्तेमाल नहीं कर सकते थे।

‘ओलाह सबसे आम प्रकार की बलि थी, जिसे हर दिन सुबह और शाम को चढ़ाया जाता था, और विशेष पवित्र दिनों पर दिन के दौरान अधिक बार चढ़ाया जाता था। एक सामान्य नियम के अनुसार बलि का जानवर कम से कम एक वर्ष का, नर और बेदाग होना चाहिए।

इसका मतलब है कि यह बीमार, लंगड़ा, विकृत, घायल नहीं हो सकता था। यहाँ तक कि कॉस्मेटिक रूप से असामान्य भी नहीं हो सकता था, शायद एक मुड़ा हुआ सींग हो, या यह असामान्य रंग का हो सकता है। यह आपका सबसे अच्छा जानवर होना चाहिए, जितना संभव हो सके पूर्णता के करीब।

अब, इस अनुष्ठान में यह बताया गया है कि: सबसे पहले उपासक पशु को तम्बू में लाता था, ताकि पुजारी उसका निरीक्षण कर सकें, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि पशु में कोई दोष नहीं है, तथा वह उचित प्रकार और आयु का है। प्रत्येक उपासक अपने पशु को बाहरी प्रांगण के पूर्वी छोर पर स्थित बड़े द्वार से लाता था, जो कि सभा के तम्बू के चारों ओर था। वे प्रांगण के उत्तर-पूर्वी कोने में खड़े होकर अपनी बारी का इंतजार करते थे।

इसके बाद जब कोई पुजारी उपलब्ध होता है, जैसा कि हमें पद 4 में बताया गया है, तो उपासक पशु के सिर पर अपने हाथ रखता है। अब यह "हाथ रखना" कुछ ऐसा है जिसके बारे में हम संभवतः एक पूरा पाठ सीख सकते हैं। लेकिन, आम तौर पर, विचार यह था: जब उपासक पशु को मारने से पहले उस पर अपने हाथ रखता है, तो यह एक आधिकारिक स्वीकृति थी कि यह विशेष पशु उस व्यक्ति की ओर से बलि के रूप में सौंपा जा रहा है जो पशु पर अपने हाथ रख रहा था; और उस क्षण पशु का जीवन परमेश्वर को सौंपा जा रहा था। इस "हाथ रखने" के लिए इब्रानी शब्द **सेमीखाह** है और इसका उपयोग बाइबल में सबसे अधिक बार किसी व्यक्ति को किसी व्यक्ति या किसी चीज़ को कोई कार्य सौंपने के लिए किया जाता है। या यह अधिकार के हस्तांतरण के बारे में है। उदाहरण के लिए जब मूसा ने इस्राएल का नेतृत्व करने का कार्य यहोशू को सौंपा, तो उसने उस पर हाथ रखा और इस प्रकार मूसा से यहोशू को अधिकार के हस्तांतरण को स्वीकार किया। यही विचार यहाँ बलि के मामले में भी लागू होता है। पशु का स्वामी, पशु पर हाथ रखकर यह संकेत देता है कि यह पशु विशेष रूप से उसके स्वामी की ओर से बलि के उद्देश्य से बनाया गया है। लेकिन इसका अर्थ केवल इतना ही नहीं है।

ऐसा भी लगता है कि हाथ रखने की इस क्रिया में पशु के स्वामी के अपराध को पशु पर स्थानांतरित करने का कुछ तत्व भी है, **सेमीखाह**; और इसलिए पशु पर अपराध स्थानांतरित करके, पशु की हत्या उपासक की मृत्यु का विकल्प बन जाती है। हालाँकि, यह भी कहा गया है कि इसका अर्थ केवल कुछ प्रकार के बलिदानों पर लागू होता है। उदाहरण के लिए, भोजन (अनाज) की भेंट और धन्यवाद—बलि का पाप से कोई लेना—देना नहीं था, इसलिए यह उचित नहीं होता। जबकि कुछ बलिदानों में हाथ रखना एक हस्तांतरण और प्रतिस्थापन दोनों को इंगित करता है। यानी उपासक का अपराध या पाप पशु में स्थानांतरित हो जाता है, और फिर पशु उपासक का विकल्प बन जाता है। यह मुख्य रूप से बलि के बकरे की आकर्षक अनुष्ठान भेंट थी जहाँ पाप के हस्तांतरण की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह से प्रदर्शित किया गया था। बलि के बकरे की रस्म में पूरे इस्राएल से बलि के बकरे को पूरे राष्ट्र के पाप हस्तांतरित किए गए थे (हम बाद में इसका अधिक बारीकी से अध्ययन करेंगे)।

हमारे पास उस समय की और उससे भी पहले की अन्य संस्कृतियों के रिकॉर्ड हैं, जो समान कारणों से इसी तरह के कार्य करती थीं। उदाहरण के लिए हिती संस्कृति में गर्भवती होने की उम्मीद रखने वाली महिला एक उपजाऊ गाय के सींग को छूती थी, ताकि वह उस गाय की प्रजनन क्षमता को अपने अंदर स्थानांतरित कर सके।

हालाँकि हमें ऐसा नहीं बताया गया है, लेकिन यह बहुत संभव है कि किसी प्रकार की प्रार्थना की गई हो या कोई भजन गाया गया हो, जब जानवर पर हाथ रखे गए हों। संभवतः उपासक और पुजारी दोनों द्वारा। इब्रानी परंपरा से कई बाइबल के भजन और अन्य गीत हैं जो होमबलि का उल्लेख करते हैं, और संभवतः इनमें से एक या अधिक का उपयोग किया गया था। भजन 40, 51 और 66 का उपयोग लगभग निश्चित रूप से बलिदान प्रक्रिया के इस भाग के दौरान किया गया था। मैं अंततः कहता हूँ क्योंकि सबसे पहले, जंगल के तम्बू के निर्माण के लगभग 300 साल बाद तक भजन लिखे भी नहीं गए थे; और दूसरा, क्योंकि जैसा कि मैंने लैव्यव्यवस्था के अपने परिचय में उल्लेख किया है, हम जानते हैं कि सदियों से बलिदान की प्रक्रियाएँ बदली और विकसित हुई हैं।

जानवर पर हाथ रखने के बाद उसे मार दिया जाता था। यह पुजारी नहीं बल्कि उपासक था जिसने जानवर को मारा और यह वेदी के उत्तरी भाग में किया गया था। संभवतः जानवर को, उसकी प्रजाति के आधार पर, वेदी के 4 सींगों में से एक से बांधा गया था; फिर उसका गला काटा गया। वास्तव में इस प्रक्रिया में पशु की गर्दन से होकर जाने वाली मुख्य धमनी (जो मस्तिष्क को रक्त पहुँचाती है) को काट दिया गया, जिससे पशु लगभग तत्काल बेहोश हो गया और उसकी मृत्यु हो गई। बाइबल में बलि के पशु की हत्या के लिए एक बहुत ही विशिष्ट शब्द, **शाहत** का उपयोग किया गया है, और इसका अर्थ यह है कि पशु को किस तरह से मारा जाना था, ताकि यह यथासंभव मानवीय, दर्द रहित और त्वरित हो; और यह इस तरह से किया जाता था कि उसका कुछ या पूरा खून अधिकृत बलि पात्र में इकट्ठा हो सके। फिर खून को परमेश्वर को अर्पित किया जाता था और अंत में पीतल की वेदी के किनारों पर छिड़का जाता था।

इसके बाद, जानवर की खाल उतारी जाती थी और फिर उसे टुकड़ों में काटा जाता था। आमतौर पर उपासक को यह काम करने के साथ-साथ आंतरिक अंगों को पानी से धोने की भी जिम्मेदारी होती थी; लेकिन समय के साथ यह कम होता गया और पुजारी और लेवियों ने इस काम को और अधिक अपने ऊपर ले लिया। फिर उपस्थित पुजारी माँस के टुकड़ों को एक-एक करके वेदी पर रखता था, ताकि उन्हें आग में जलाया जा सके। अगर जली हुई भेंट, 'ओलाह' पक्षी की हो, तो थोड़ी अलग प्रक्रिया होती है, क्योंकि इसका आकार और शारीरिक रचना इसके गले को काटना और इसे काटना अव्यावहारिक बनाती है। ध्यान दें कि कैसे उपासक, आम आदमी, अधिकांश कर्तव्यों का पालन करता है, और पुजारी केवल अनुष्ठान करता है, रक्त को एक अनुष्ठान पात्र में इकट्ठा करता है, इसे वेदी के किनारों पर छिड़कता है, और फिर माँस को आग में डाल देता है। जब हम इस दृश्य की कल्पना कर सकते हैं, तो हम समझने लगते हैं कि हमारी पूजा गतिविधियों में चर्च कितना

निष्क्रिय और बाँझ हो गया है। पूजा में हमारी भागीदारी आमतौर पर दिखावे तक ही सीमित रह जाती है। परमेश्वर की योजना के अनुसार ऐसा नहीं है। उपासक पूजा में सक्रिय भागीदार था। इस मामले में, बलिदान प्रक्रिया में।

अब, होमबलि का उद्देश्य क्या था? जैसा कि मैंने आपको लैव्यव्यवस्था के परिचय में बताया था, बलिदान प्रणाली के सभी अनुष्ठान बलिदान पाप के बारे में नहीं थे। दिलचस्प बात यह है कि लैव्यव्यवस्था में निर्धारित सबसे पहला बलिदान, 'ओलाह, किसी उपासक द्वारा किए गए पाप के प्रायश्चित के लिए नहीं था। कम से कम उस तरह से नहीं जैसा कि कोई आमतौर पर सोचता है। बल्कि, जैसा कि पद 3 हमें बताता है, इसका संबंध परमेश्वर से यह प्रार्थना करने से है कि वह आपको, बलिदान लाने वाले उपासक को, परमेश्वर के निकट आने की अनुमति देकर आपको स्वीकार करे। परमेश्वर के साथ शांति ही इसका उद्देश्य है। 'ओलाह को उपासक की ओर से परमेश्वर को दिया जाने वाला उपहार माना जाता था; यह एक तरह का उपहार और फिरौती का संयोजन है। और, भले ही 'ओलाह को तकनीकी रूप से भोजन की भेंट के रूप में वर्गीकृत किया गया हो, लेकिन ऐसा नहीं है कि इब्रानियों ने सोचा कि यह जानवर किसी तरह से उनके परमेश्वर के लिए भोजन था। बल्कि, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, यह उस धुँएँ के बारे में अधिक है जो जलते हुए माँस से निकलता था जो स्वर्ग में परमेश्वर के पास ऊपर चढ़ता था जो उनके दिमाग में था। जब परमेश्वर ने धुँएँ को "सुंघा", तो यह उन्हें अच्छा लगा... इससे उन्हें खुशी हुई... क्योंकि यह दर्शाता है कि) एक व्यक्ति उनकी आज्ञाओं का पालन कर रहा था और इ) शांति, शालोम, हो रही थी। दूसरे शब्दों में, परमेश्वर बेहद चाहते हैं कि मनुष्य उनके साथ शांति से रहें। इतना कि उन्होंने इस व्यवस्था की स्थापना की जिसके लिए यहोवा को अपने लाखों— करोड़ों मूल्यवान जीवित प्राणियों की कीमत चुकानी पड़ी, वे प्राणी जिनकी वह बहुत परवाह करता था; लेकिन मानव जाति का मतलब उनके लिए इतना अधिक था कि उन्होंने हमारे लिए उन सुंदर निर्दोष प्राणियों को भी नहीं छोड़ा और मनुष्य के साथ शांति के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए ऐसा करना उन्हें अच्छा लगा। जब मसीह मरा तो हमें यह भी बताया गया कि "परमेश्वर को यह अच्छा लगा" कि उसका अपना पुत्र बलिदान हो गया क्योंकि इससे मनुष्य यहोवा के साथ सार्वभौमिक और शाश्वत शांति के एक और कदम करीब आ गया।

तो यह 'ओलाह' से निकलने वाले धुँएँ की सुगंध है जो परमेश्वर को प्रसन्न करती है। यह कहना गलत नहीं होगा कि बलि के धुँएँ ने परमेश्वर को शांत किया और इसने परमेश्वर को उस व्यक्ति के प्रति अधिक अनुकूल रवैया रखने की अनुमति दी जो 'ओलाह' बना रहा था। फिर भी, आइए याद रखें, जब कोई व्यक्ति पाप करता है तो वह होमबलि नहीं लाता है। यह होमबलि का उद्देश्य नहीं था। यह परमेश्वर के साथ अच्छे संबंध बनाए रखने के प्राथमिक कारण से नियमित रूप से लाया जाता था, परमेश्वर के निर्धारित बलिदान अनुष्ठानों का पालन करके उसे प्रसन्न करने की कोशिश करके। 'ओलाह' पाप को दूर नहीं करता था और न ही यह किसी भी तरह से उपासक को बदलता था। अर्थात्, होमबलि के परिणामस्वरूप उपासक का अपना

पापी स्वभाव परिवर्तित नहीं हुआ... केवल इस पापी के प्रति परमेश्वर का रवैया बदल गया। हालाँकि लैव्यव्यवस्था और विभिन्न पुराना नियम भविष्यवक्ताओं और यहाँ तक कि भजन संहिता के लेखकों से पर्याप्त सबूत मिलते हैं कि होमबलि के अनुष्ठान के साथ किसी प्रकार की प्रायश्चित्त जैसी प्रक्रिया हो रही थी। मैं आपको सबसे अच्छे तरीके से बता सकता हूँ कि होमबलि का सम्बन्ध मनुष्य की सम्पूर्ण पापमय स्थिति से है, न कि किसी व्यक्ति द्वारा किए गए किसी विशेष पाप से। और मुझे लगता है कि "प्रायश्चित्त" शायद हमारी पश्चिमी संस्कृति के लिए सबसे अच्छा शब्द नहीं है, क्योंकि प्रायश्चित्त के साथ यह विचार जुड़ा हुआ है कि आपने जो कुछ किया है वह परमेश्वर के सामने लाया गया था, लेकिन इस अनुष्ठान बलिदान के साथ अब इसे "साफ़" कर दिया गया और माफ़ कर दिया गया। और यह बहुत स्पष्ट लगता है कि होमबलि आपके द्वारा किए गए किसी काम को साफ़ करने के लिए नहीं है; बल्कि यह आपके स्वभाव के कारण फिरौती का उपहार है: एक प्राणी जिसका स्वभाव ही पापी है। और यह उपहार आपको, एक अपूर्ण प्राणी को, सबसे पवित्र और परिपूर्ण परमेश्वर के पास जाने की अनुमति देने के लिए आवश्यक है। 'ओलाह' व्यक्ति के लिए एक स्वैच्छिक भेंट है। यह हृदय के मामले के रूप में किया जाता है। यह किसी की भ्रष्ट स्थिति को स्वीकार करना है और यहोवा की न्याय प्रणाली और उसकी इच्छा के प्रति पूर्ण समर्पण को दर्शाता है। इसलिए पुराने नियम से निपटने में शब्दार्थ जितना भी कठिन हो सकता है, मुझे लगता है कि 'ओलाह' को समझने का बेहतर तरीका यह है कि यह भ्रष्ट मनुष्य और सिद्ध परमेश्वर के बीच सामंजस्य का मार्ग प्रशस्त करता है। यह कहना भी गलत नहीं होगा कि होमबलि परमेश्वर के क्रोध से सुरक्षा प्रदान करती है।

बाइबल में होमबलि के आध्यात्मिक महत्व के बेहतर उदाहरणों में से एक, जो मूसा को बलिदान प्रणाली दिए जाने से भी पहले होता है, इसहाक का उसके पिता अब्राहम द्वारा लगभग बलिदान किया जाना है। तत्व यह है कि इसहाक को मार दिया जाना था और एक वेदी पर जला दिया जाना था। और, हम कहानी से देख सकते हैं कि यह भी किसी पाप या किसी अन्य के बारे में नहीं था जो इसहाक या अब्राहम ने किया था। तो यह किस बारे में था? एक होमबलि, एक 'ओलाह' के रूप में, यह उपासक की ओर से ईश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण और आज्ञाकारिता के बारे में था। अब्राहम। इसने प्रतिस्थापन के सिद्धांत को भी प्रदर्शित किया जब इसहाक को एक मेढ़े द्वारा प्रतिस्थापित किया गया जिसे पास की कुछ कंटीली झाड़ियों में उसके सींगों से पकड़ा गया था। और बलिदान ने फिरौती के विचार को प्रदर्शित किया... कि इसहाक को स्वेच्छा से चुकाई जाने वाली कीमत थी, ताकि मानव जाति ईश्वर के साथ शांति से रह सके।

बेशक ऐसा नहीं किया गया क्योंकि यहोवा ने इसहाक की मृत्यु से ठीक पहले इस प्रक्रिया को रोक दिया था। तो यह सब क्यों किया गया... अब्राहम, सारा और इसहाक को इस भयानक परीक्षा से गुज़रने का क्या मतलब था, जो उन्हें बीच में ही रोक दिया गया? यह भविष्य की लैव्यव्यवस्था बलिदान प्रणाली (इसहाक की घटना निर्गमन से 500 साल पहले हुई थी) और यीशु की छाया थी जो उससे भी अधिक भविष्य में था। अंत में, परमेश्वर पिता ने अब्राहम की भूमिका निभाई, और नासरत के यीशु ने इसहाक की भूमिका निभाई।

केवल, इस बार, यहोवा ने प्रक्रिया को नहीं रोका, क्योंकि यह वास्तविक सौदा था। यीशु का बलिदान वह था जिसकी तैयारी परमेश्वर ने आदम को बनाने से पहले से ही की थी।

जैसे-जैसे हम आगे बढ़ेंगे, हम देखेंगे कि होमबलि अक्सर अन्य प्रकार के बलिदानों के साथ मिलकर दी जाती थी। खासकर अगर उन अन्य प्रकार के बलिदानों को पाप के प्रायश्चित के लिए किया जाता था। लेकिन अध्याय 1 में सभी बलिदानों के पीछे के मूलभूत सिद्धांतों को स्थापित किया जा रहा है। और इन सिद्धांतों में सबसे प्रमुख यह है कि लैव्यव्यवस्था के गोत्र के एक पुजारी को बलिदान का कार्य अवश्य करना चाहिए अन्यथा यह न केवल अमान्य है, बल्कि पवित्र अभयारण्य पर अपवित्रता लाने के लिए उत्तरदायी है। यह उस समय तक इस्राएल के लिए जिस तरह से था, उससे एक बड़ा बदलाव है; क्योंकि जब तक ये बलिदान संबंधी कानून मूसा को नहीं दिए गए थे, तब तक प्रत्येक इब्रानी परिवार अपने स्वयं के संस्कार और अनुष्ठान करता था, जिसमें परिवार के वरिष्ठ ज्येष्ठ पुत्र एक प्रकार के पारिवारिक पुजारी के रूप में कार्य करता था। इस सदियों पुरानी परंपरा को अब गैरकानूनी घोषित कर दिया गया और इसे इस्राएल के नए स्थापित पुजारी वर्ग को सौंप दिया गया। वैसे: इस्राएल ने इस नई वास्तविकता को आसानी से स्वीकार नहीं किया और विशेष रूप से ज्येष्ठ पुत्रों ने मूसा के इन कानूनों द्वारा उनसे छीनी गई स्थिति के नुकसान की सराहना नहीं की।

दूसरी बात जो हम पाते हैं वह यह है कि केवल पुजारियों को बलि के प्राणी के रक्त को संभालने का अधिकार है; इसके अलावा प्रत्येक बलि से रक्त की कुछ मात्रा को इकट्ठा करके पवित्र वेदी पर छिड़कना पड़ता है। यदि किसी जानवर का रक्त वेदी पर नहीं छिड़का गया तो ऐसा लगता है कि बलिदान कभी हुआ ही नहीं। बलिदान का मुख्य उद्देश्य रक्त है। हमने निर्गमन से सबक लेते हुए इस आवश्यकता के कारण को हल्के से कवर किया है कि रक्त को पीतल की वेदी पर छिड़का जाना चाहिए, और हम इसे फिर से कवर करेंगे; लेकिन अभी के लिए यह कहना पर्याप्त है कि वेदी से संपर्क करने वाले जानवर के रक्त के माध्यम से ही वेदी की पवित्रता ने बलि के रक्त को पवित्रता से संक्रमित किया। पवित्रता का एक प्रमुख बाइबल सिद्धांत यह है कि एक बार जब परमेश्वर किसी वस्तु या व्यक्ति को पवित्र घोषित करते हैं, तो पवित्रता की वह स्थिति केवल संपर्क के माध्यम से वस्तु से वस्तु, वस्तु से व्यक्ति, व्यक्ति से व्यक्ति और व्यक्ति से वस्तु तक प्रसारित हो सकती है। उसी तरह एक अपवित्र वस्तु या व्यक्ति जो किसी पवित्र वस्तु या व्यक्ति को छूता है, वह उसे अशुद्धता से संक्रमित करता है। यही कारण है कि जो कुछ भी पवित्र है उसे किसी भी सामान्य या अपवित्र चीज़ से अलग रखा जाना चाहिए।

बलि के पशु का रक्त प्रभावकारी होने के लिए उसे किसी न किसी तरह पवित्रता की अवस्था प्राप्त करनी ही होगी अन्यथा उसे ईश्वर को अर्पित नहीं किया जा सकता। न तो बलि का पशु और न ही उसका रक्त स्वाभाविक रूप से पवित्र है; जब किसी पशु को बलि के लिए चुना जाता है और उसका रक्त बहाया जाता है तो कोई जादुई चीज़ नहीं होती। लेकिन वह रक्त उसी क्षण पवित्र हो जाता है जब वह पीतल की वेदी के

संपर्क में आता है, और ईश्वर की उस वेदी की अविश्वसनीय रूप से पवित्र अवस्था उस रक्त को अपनी पवित्रता प्रदान करती है जिसे उस पर छिड़का गया है। अब रक्त अपने उद्देश्य के लिए उपयुक्त है।

अगले सप्ताह हम लैव्यव्यवस्था अध्याय 2 पर चर्चा करेंगे और अगले सबसे सामान्य बलिदान पर चर्चा करेंगे जिसे इब्रानी भाषा में **मिनचाहह** कहा जाता है।